१३. महाराष्ट्र का सामाजिक जीवन

छत्रपति शिवाजी महाराज द्‌वारा स्थापित हिंदवी स्वराज्य प्रजा का राज्य था । प्रजा का कल्याण हो, लोगों पर अत्याचार न हो, महाराष्ट्र धर्म की रक्षा हो, यह शिवाजी महाराज का उदात्त उद्‌देश्य था । शिवाजी महाराज के बादवाले कालखंड में भी मराठी राज्य का भारत भर में विस्तार हुआ । मराठी सत्ता लगभग १५० वर्षों तक बनी रही ।

पिछले पाठों में हमने मराठी राज्य प्रशासन की जानकारी का अध्ययन किया । इस पाठ में हम तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति और जनजीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

सामाजिक परिस्थिति : खेती और खेती पर आधारित उद्‌योग गाँव के स्तर पर उत्पादन के प्रमुख साधन थे । गाँव के पाटिल पर गाँव की रक्षा का तो कुलकर्णी पर राजस्व की देखभाल करने का दायित्व था । पाटिल के कार्य करने के लिए पाटिल को जागीर के रूप में जमीन दी जाती थी । इस कार्य के लिए उसे राजस्व का कुछ हिस्सा मिलता था । परजा-पवन (व्यावसायिकों) को गाँव के लोगों के लिए किए गए उनके काम का पारिश्रमिक वस्तुओं के रूप में मिलता था । देहात में चलनेवाले व्यवसायों के दो प्रमुख वर्ग थे - काला और सफेद । काले में काम करने वाले किसान कहलाते और सफेद में काम करनेवाले सफेदपेशा । गाँव-देहात के सभी कार्य व्यवहार पारस्परिक सूझ-बूझ के आधार पर चलते थे। संयुक्त परिवार को अधिक महत्त्व प्राप्त था।

क्या तुम जानते हो ?

गाँव में लुहार, बढ़ई, कुम्हार, सुनार आदि बारह बलुतेदार (परजा-पवन) होते थे । ये बलुतेदार गाँव के लोगों के काम करते थे ।

रीति-रिवाज : इस कालखंड में बाल विवाह पद्‌धति प्रचलित थी । बहुपत्नीत्व की प्रथा भी प्रचलन में थी । विधवाओं के पुनर्विवाह के उदाहरण मिलते हैं। मानव शरीर पर अंतिम संस्कार के रूप में दाहकर्म, दफन करने और विसर्जित करने जैसी पद्‌धतियाँ प्रचलित थीं । छोटी-छोटी बातों अथवा युद्‌ध पर कूच करने हेतु शुभ समय अथवा मुहूर्त देखा जाता था । लोगों का शकुन, स्वप्न पर विश्वास था । ईश्वर अथवा ग्रहों का प्रकोप न हो; इसलिए अनुष्ठान किए जाते थे। दान-धर्म किया जाता था । ज्योतिष पर लोगों की श्रद्‌धा थी । वैज्ञानिक दृष्टि और सोच का अभाव था । औषधि-उपचार की अपेक्षा मानता, मनौती को महत्त्व प्राप्त था ।

रहन-सहन : बहुसंख्य लोग गाँव-देहात में रहते थे । उन्हें बाहर से केवल नमक मँगवाना पड़ता था। किसानों की आवश्यकताएँ सीमित थीं । किसान ज्वार, बाजरा, गेहूँ, मडुआ, मकई, चावल आदि अनाज उगाते थे । प्रतिदिन के भोजन में भाकरी (कोंचा/मोटी रोटी), प्याज, चटनी और सूखी सब्जी का समावेश था। लोग अपने-अपने व्यवहार वस्तु विनिमय (वस्तुओं का लेन-देन) पद्‌धति द्‌वारा करते थे । गाँव-देहात के मकान सादे, मिट्‌टी और ईंटों से बने होते थे । शहर में एक मंजिला अथवा दो मंजिला वाड़े (कोठियाँ) होते थे । संपन्न वर्ग के लोगों के भोजन में दाल-भात, रोटी, सब्जियाँ, कचूमर, दही-दूध के पदार्थ होते थे। पुरुष धोती, कुरता, अंगरखा, मुंडासा धारण करते थे । लुगड़ा (नौ गज की साड़ी) और चोली स्त्रियों की पोशाक थी।

तीज-त्योहार : लोग गुडी पाडवा, नागपंचमी, बैलपोळा (बैलों की पूजा), दशहरा, दीपावली, मकर संक्रांत, होली, ईद जैसे तीज-त्योहार मनाते थे । पेशवाओं के शासनकाल में गणेशोत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जाता । उसका स्वरूप घरेलू था । पेशवा स्वयं गणेश भक्त थे । अतः गणेशोत्सव को महत्त्व प्राप्त हुआ । प्रतिवर्ष यह उत्सव भाद्रपद महीने की चतुर्थी से लेकर अनंत चतुर्दशी तक चलता था ।

साढ़े तीन शुभ और उत्तम मुहूर्तों में से दशहरा एक शुभ मुहूर्त माना जाता है । लोग दशहरे के दिन से

शुभकार्य प्रारंभ करते हैं । इस दिन शस्त्रों और औजारों की पूजा की जाती । सीमोल्लंघन करते । एक-दूसरे को शमी के पत्ते देते । दशहरे के बाद मराठे युद्ध अभियान पर निकलते । दीवाली में बलि प्रतिपदा (दीपावली पाडवा) और भाई दूज विशेष रूप से मनाए जाते । गाँव-देहात में मेले लगते । मेलों में दंगल (कुश्ती) के अखाड़े लगते । गुढ़ी पाडवा के दिन गुढ़ी (धार्मिक ध्वजा) खड़ी कर यह त्योहार मनाया जाता । उत्सव-पर्वों में नृत्य-गान, डफ (चंग) के गीत, तमाशा (नौटंकी) आदि मनोरंजन के कार्यक्रम होते । तमाशा (नौटंकी, लोकनाट्य) मनोरंजन का लोकप्रिय प्रकार था ।

बैलपोळा (बैलों की पूजा का त्योहार)

शिक्षा पद्धति : इस कालखंड की शिक्षा पद्धति में पाठशालाओं और मदरसों को स्थान था । घर में ही लेखन, पठन, हिसाब-किताब रखने की शिक्षा मिल जाती थी । मोड़ी (सर्राफा/घसीटा) लिपि का उपयोग लेन-देन और व्यापार में किया जाता था ।

यातायात-यात्रा : घाटमार्ग, सड़क, नदी पर बने पुल द्वारा यातायात चलता था । अनाज, वस्त्र, माल-सामान की ढुलाई बैलों की पीठ पर की जाती थी। नदी पार करने के लिए नावों का उपयोग किया जाता था। चिट्ठी-पत्रों को लाने-ले जाने का कार्य सांडनी सवार और दूत अथवा हरकारा करते थे ।

खेल : इस कालखंड में विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते थे । खेल मनोरंजन के साधन थे । कुश्ती और युद्ध कला जैसे खेल लोकप्रिय थे । मल्लखंभ (मलखम), दंड, कुश्ती लड़ना, गतका-फरी चलाना, बोथाटी (एक प्रकार की लाठी, जिसके

मल्लखंभ (मलखम)

दोनों सिरों पर लकड़ी के गोले होते हैं) घुमाना जैसे खेल खेले जाते। हुतूतू, खो-खो, आट्यापाट्या जैसे मैदानी खेल और चौसर, गंजीफा, शतरंज जैसे भीतरी खेल लोकप्रिय थे।

धर्म तथा आचार-विचार : इस कालखंड में हिंदू और मुस्लिम ये दो प्रमुख धर्म दिखाई देते हैं । छत्रपति शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति उदारतावादी थी । प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने धर्म का पालन करे, अपने धर्म को दूसरे पर बलात न लादे; इस प्रकार की विचारधारा उस कालखंड में प्रचलित थी । सरकार द्वारा पाठशालाओं, मंदिरों, मदरसों और मस्जिदों को आर्थिक सहायता दी जाती थी । दोनों धर्मों के अनुयायी एक-दूसरे के पर्वों-त्योहारों में सम्मिलित होते थे । वारकरी, महानुभाव, दत्त, नाथ, रामदासी पंथ प्रचलित थे ।

स्त्री जीवन : इस कालखंड में स्त्रियों का जीवन बड़ा कष्टमय था । उसका विश्व केवल मायका और ससुराल तक सीमित था । उसकी शिक्षा-दीक्षा की ओर किसी का ध्यान न था । कुछ ही स्त्रियों ने अक्षरज्ञान, प्रशासन और युद्ध कौशल में प्रगति की थी । उनमें वीरमाता जिजाबाई, येसूबाई, महारानी ताराबाई, उमाबाई दाभाडे, गोपिकाबाई, पुण्यश्लोक अहिल्याबाई का समावेश था । बाल विवाह, अनमेल विवाह, विधवापन, केशवपन (मुंडन), सती, बहुपत्नीत्व जैसी कुप्रथाओं में स्त्रियों का जीवन

जकड़ गया था । संक्षेप में; स्त्रियों का जीवन अत्यंत प्रतिकूल हो गया था ।

ई.स.१६३० से १८१० अर्थात पौने दो सौ वर्षों के कालखंड को सामान्यतः मराठीशाही कहते हैं । इस कालखंड की कला और स्थापत्य की हम संक्षेप में समीक्षा करेंगे ।

शिल्पकला : शिवाजी महाराज के कालखंड में कसबा गणपति मंदिर का जीर्णोद्धार, लाल महल का निर्माण, राजगढ़ और रायगढ़ पर किए गए निर्माण कार्य, जलदुर्गों का निर्माण जैसे स्थापत्य निर्माण का उल्लेख मिलता है । इस कालखंड में हिरोजी इंदुलकर विख्यात स्थापत्य विशारद था ।

गाँव बसाते समय संभवतः एक-दूसरे को समकोण में काटतीं सड़कें, सड़क के किनारे पत्थर लगाना, नदी के किनारे घाट जैसी निर्माण कार्य की संरचना होती थी। पेशवाओं के कालखंड में अहमदनगर, बीजापुर जैसी पेयजल व्यवस्था पुणे शहर में की गई थी । पेशवाओं ने भूमिगत नल, छोटे-छोटे बाँध, बाग-बगीचे, हौज, पानी के फौआरों का निर्माण करवाया । पुणे शहर के समीप हड़पसर क्षेत्र के दिवे घाट में बनाया गया मस्तानी तालाब स्थापत्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

पुणे का शनिवारवाड़ा, विश्रामबागवाड़ा, नाशिक का सरकारवाड़ा, कोपरगाँव का रघुनाथ पेशवा का वाड़ा, सातारकर छत्रपतियों के वाड़े, इनके अतिरिक्त वाई, मेणवली, टोके, श्रीगोंदे, पंढरपुर के पुराने वाड़े मध्ययुगीन वाड़ा संस्कृति के चिह्न हैं । वाड़ों के निर्माण कार्य में कच्ची और पक्की ईंटों का उपयोग किया जाता था । लकड़ी के खंभे, शहतीर, तराशे हुए पत्थर, कमानें, उत्तम घोटा हुआ चूना, खपरैल छप्पर, कीचड़, बाँस का उपयोग भी निर्माण कार्य में किया जाता था । वाड़ों की सजावट में चित्रकार्य, रंगकार्य, काष्ठशिल्प (लकड़ी के शिल्प), आईनों का उपयोग किया जाता था ।

मंदिर : शिवाजी महाराज के कालखंड में बनाए गए मंदिर यादवकालीन हेमाडपंती शैली के हैं । कोल्हापुर की अंबाबाई मंदिर का शिखर, पहाड़ पर बने जोतिबा के मंदिर, शिखर शिंगणापुर के शंभुमहादेव का मंदिर, वेरुल (एलोरा) का घृष्णेश्वर मंदिर शिल्पविद्या के उत्तम उदाहरण हैं । प्रतापगढ़ पर देवी भवानी के और गोआ के सप्तकोटेश्वर मंदिर का निर्माण कार्य शिवाजी महाराज द्वारा करवाया गया है। पेशवाओं के कार्यकाल में नाशिक का कालाराम मंदिर, त्र्यंबकेश्वर का शिवमंदिर, गोदावरी-प्रवरा नदियों के संगम पर स्थित कायगाँव और टोके के शिव मंदिर, नेवासा का मोहिनीराज मंदिर बनाए गए।

घृष्णेश्वर मंदिर

घाट : नदी अथवा नदियों की संगम स्थली पर तराशे गए पत्थरों से बनाए हुए घाट मराठीशाही की विशेषता है । इस कालखंड में सबसे सुंदर घाट गोदावरी और प्रवरा नदियों के संगम पर प्रवरा संगम और टोके में बनाए गए हैं । पक्की निर्माणवाली सीढ़ियों की कतार में, निश्चित दूरी पर दूसरी सीढ़ी आगे बनाई जाती थी । इस कारण सभी घाटों का रूप निखर उठता था । पानी के बहाव द्वारा घाट का स्खलन न हो; इसलिए निश्चित दूरी पर पक्के बुर्ज बाँधे जाते ।

चित्रकला : पेशवाओं के कालखंड में शनिवारवाड़ा की दीवारों पर बनाए गए चित्र महत्त्वपूर्ण हैं । इस कालखंड में राघो, तानाजी, अनूपराव, शिवराम, माणकोजी जैसे विख्यात चित्रकार हुए । सवाई माधवराव पेशवा के कार्यकाल में गंगाराम तांबट प्रख्यात चित्रकार था । पेशवाओं ने चित्रकला को प्रोत्साहन दिया । पेशवाओं के

कार्यकाल में पुणे, सातारा, मेणवली, नाशिक, चांदवड और निपाणी के वाड़ों की दीवारों पर चित्र बनाए गए थे। पांडेश्वर, मोरगाँव, पाल, बेनवड़ी और पुणे के समीप पाषाण में बनाए गए मंदिरों की दीवारों पर चित्र बनाए गए थे । इस कालखंड के चित्रों के विषय दशावतार, गणेशजी, शंकर, रामपंचायतन, विदर्भ के जामोद में निर्मित जैन मंदिर में अंकित जैन चरित्र और पौराणिक कथाएँ थे । इसी तरह रामायण, महाभारत, तीज-त्योहार, पर्व-उत्सव पर आधारित चित्र बनाए जाते थे । पोथियों पर अंकित चित्र, लघुचित्र, व्यक्तिचित्र और प्रसंगचित्र भी थे ।

शिल्प : इसी कालखंड में शिवाजी महाराज द्वारा कर्नाटक पर किए गए आक्रमण के समय मल्लम्मा देसाई से हुई भेंट का शिल्प, भुलेश्वर मंदिर की शिल्पकला, व्यक्तियों के शिल्प, पशु-प्राणियों के शिल्प (जैसे-हाथी, मोर, बंदर), टोके के मंदिरों में बने शिल्प और बाहरी भागों की शिल्पकला, पुणे का त्रिशुंड गणपति मंदिर, मध्य प्रदेश की अहिल्यादेवी होळकर की छतरी, नेवासा के मोहिनीराज मंदिर की शिल्पकला महत्त्वपूर्ण है ।

धातु की मूर्तियाँ : पेशवाओं ने पुणे की पर्वती में बनाए गए मंदिर में पूजा के लिए पार्वती और गणपति की मूर्तियाँ बनवाकर ली थीं । इसी तरह लकड़ी के शिल्प भी बनाए जाते थे ।

वाङ्मय (ग्रंथ साहित्य) : संत साहित्य, पौराणिक आख्यान, टीका वाङ्मय, ओवी, अभंग (सबद), ग्रंथ, कथाकाव्य, चरित्रकथाएँ, संतों के चरित्र, फुटकल (मुक्त) काव्य रचनाएँ, देवी-देवताओं से संबंधित आरतियाँ, पोवाडे (शौर्य कथाएँ), बखरी (इतिहास), ऐतिहासिक पत्र ये सभी वाङ्मय अर्थात साहित्य के विविध अंग हैं ।

नाट्यकला : सत्रहवीं शताब्दी के अंत में दक्षिण में तंजौर नामक स्थान पर मराठी नाटकों का प्रारंभ हुआ । सरफोजी राजाओं ने इस कला को प्रोत्साहन दिया। इस नाटक में गायन और नृत्य को महत्त्व प्राप्त था ।

अब तक हमने मध्यकाल की समीक्षा की । मराठी सत्ता का उदय और उसके विस्तार का अध्ययन किया। अगले वर्ष हम आधुनिक कालखंड का अध्ययन करेंगे।

स्वाध्याय

१. तालिका पूर्ण करो :

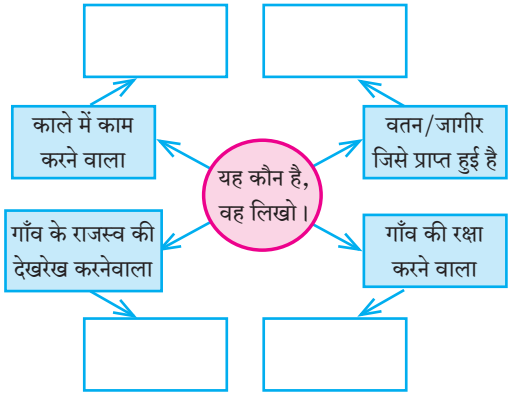

२. समाज में कौन-कौन-सी कुप्रथाएँ प्रचलित हैं ? उनका उन्मूलन करने के उपाय सुझाओ ।

३. तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-से पर्व-त्योहार मनाए जाते हैं, इस विषय पर विस्तार में एक टिप्पणी लिखो ।

४. निम्न मुद्दों के आधार पर शिवाजी महाराज कालीन सामाजिक जीवन तथा वर्तमान सामाजिक जीवन की तुलना करो ।

क्र.	मुद्दे	शिवाजी महाराज कालीन सामाजिक जीवन	वर्तमान सामाजिक जीवन
१.	व्यवहार	.....	.....
२.	मकान	.....	पक्के सीमेंट, कांक्रीट के अनेक मंजिला मकान
३.	यातायात	.....	बस, रेल, विमान
४.	मनोरंजन	.....	.....
५.	लिपि	.....	.....

उपक्रम

हमारे देश की महान और उल्लेखनीय नारियों के बारे में जानकारी प्राप्त करो । उसका कक्षा में पठन करो। जैसे - पी.वी.सिंधु, साक्षी मलिक